THE VILLAGE
INTERNATIONAL SCHOOL
"We Nurture Dreams"

QUESTION BANK **HINDI** **RAHEEM KE DOHE**

सार-आधारित प्रश्न (Extract Based Questions)

1) कहि रहीम संपति सगे , बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे , तेई साँचे मीत॥
जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाँड़ति छोह॥

प्रश्न **1.** उपर्युक्त पद्यांश के लेखक का नाम बताएं।

प्रश्न **2.** सगे **–** संबंधी कब हमारे अपने बनते हैं।

प्रश्न **3.** सच्चा मित्र कौन होता है**?**

प्रश्न **4.** नदी में मछली को पकड़ने के लिए जाल डालकर बाहर निकाला जाता है तो उसी समय पानी जाल से बाहर क्यों निकल जाता है**?**

प्रश्न **5.** 'छोह' शब्द का क्या अर्थ है**?**

2 . तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियत न पान।
कहि रहीम परकाज हित , संपति सचहिं सुजान॥

प्रश्न **1.** 'तरुवर' शब्द का क्या अर्थ है**?**

प्रश्न **2.** वृक्ष**,** नदी और तालाब अपना क्या ग्रहण नहीं करते है**?**

प्रश्न **3.** सज्जन और अच्छे व्यक्ति अपने द्वारा इकठ्ठे किए गए धन का उपयोग कैसे करते है**?**

3) थोथे बादर क्वार के, ज्यों रहीम घहरात ।
धनी पुरुष निर्धन भए, करें पाछिली बात ॥
धरती की सी रीत है, सीत घाम औ मेह ।
जैसी परे सो सहि रहे, त्यों रहीम यह देह॥
प्रश्न **1.** उपर्युक्त पद्यांश के पाठ का नाम बताएं।

प्रश्न **2.** अश्विन महीने के बादल कैसे होते है**?**

प्रश्न **3.** कंगाल होने के बाद अमीर व्यक्ति क्या करते है**?**

प्रश्न **4.** मनुष्य के शरीर की सहनशक्ति किसके समान है**?**

प्रश्न **5.** 'सहि' शब्द का क्या अर्थ है**?**

अतिरिक्त प्रश्न

प्रश्न **1.** रहीम ने सच्चे मित्र की क्या पहचान बताई है**?**

प्रश्न **2.** वृक्ष और सरोवर का उदाहरण देकर रहीम जी क्या समझाना चाहते हैं**?**

प्रश्न **3.** निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखिए **–** सँचहि, तरुवर, सुजान, थोथा, घाम ।

प्रश्न **4.** वृक्ष और सरोवर किस प्रकार दूसरों की भलाई करते हैं**?**

प्रश्न **5.** रहीम ने क्वार के बादलों की तुलना किससे और क्यों की है**?**

प्रश्न **6.** "धरती की सी रीत है , सीत घाम औ मेह ।

प्रश्न **7.** "तरुवर फल नहिं खात है , सरवर पियत न पान।

कहि रहीम परकाज हित , संपति सचहिं सुजान॥"

उपरोक्त पंक्तियों का अर्थ बताइए।

प्रश्न **8.** "कहि रहीम संपति सगे , बनत बहुत बहु रीत।

बिपति कसौटी जे कसे , तेई साँचे मीत॥"

उपरोक्त पंक्तियों का अर्थ बताइए।

प्रश्न **9.** "जाल परे जल जात बहि , तजि मीनन को मोह।

रहिमन मछरी नीर को , तऊ न छाँड़ति छोह॥"

उपरोक्त पंक्तियों का अर्थ बताइए।